REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

भारत की विदेश नीति : ऐतिहासिक विकास व आर्थिक संभावनाएँ

मीना धीवां
शोधार्थी , राजनीति विज्ञान विभाग , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

सार—संक्षेप

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति कुछ सिद्धांतों, हितों एवं उद्देश्यों का समूह होता है, जिसके माध्यम से एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के व्यवहार को बदलने और अपनी गतिविधियों को अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में ढ़ालने की कोशिश करता है। भारत की विदेशनीति के अध्ययन के संदर्भ में भी यह बात स्पष्ट रूप से साने आती है। विदेशनीति गतिशील होती है जो मुख्यतः आंतरिक व बाह्य वातावरण के परिवर्तन के साथ बदलती है। उदारीकरण के दौर में भू—आर्थिक तत्वों पर अधिक बल दिया जा रहा है ताकि भारत की वैश्विक स्तर पर स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके।

संकेत शब्द : विदेश नीति, राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय सुरक्षा

परिचयात्मक

विदेश नीति के निर्माण में अनेक तत्वों का योगदान माना जाता है इनमें किसी देश में विद्यमान सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियां, देश का नेतृत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विदेश नीति के निर्माण में परिवर्तन स्वभाविक माना जाता है जैसे—जैसे सामाजिक—आर्थिक परिवेश बदलता है वैसे ही विदेश नीति निर्माता भी विदेश नीति के निर्माण करते समय उन परिवर्तनों को साथ लेकर चलते है ताकि देश के राष्ट्रीय हित को सुनिश्चित किया जा सके। राजनेता राष्ट्रीय हितों से निर्देशित होते है जार्ज माडेलस्की विदेश नीति को इस रूप में परिभाषित करते है ''अन्य राज्यों के व्यवहार को बदलने तथा अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में अपनी गतिविधियों को समायोजित करने के लिए समुदायों की क्रिया—कलापों की व्यवस्था विदेश नीति है।''

किसी भी देश की विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितों से प्रेरित होती है सामान्य शब्दों में राष्ट्रीय हित का आशय ऐसा सामान्य दीर्घकालिक सतत् उद्देश्य और हित है, जिसे कोई भी राज्य या सरकार प्राप्त करना चाहती है। राष्ट्रीय हित का आशय उन मूल्यों से है, जिसे राष्ट्र एक —दूसरे के संबंधों में सुरक्षित रखना चाहते है। और राष्ट्रीय हित ही किसी देश की विदेश नीति और अंतराष्ट्रीय संबंधों का केन्द्र बिन्दू हैं राष्ट्रीय हित परिवर्तनशील होते है जिनका निर्धारण देश एवं काल के अनुसार होता है अतः एक राज्य के हित सदैव एक समान नहीं होते है। परम्परागत रूप से यही विश्वास किया जाता है कि किसी देश की विदेश नीति केवल राष्ट्रीय हित से प्रेरित होती है। राष्ट्रीय हितों का निर्माण कैसे होता है इस संबंध में अनेक दृष्टिकोण है यथार्थवादी दृष्टिकोण राष्ट्रीय हितों को राष्ट्रीय शक्ति से जोड़ते है जबकि आदर्शवादी राष्ट्रीय हित को सार्वभौमिक नैतिक मान्यताओं के रूप में देखते है। प्रमुख तौर पर एक सम्पन्न देश का राष्ट्रीय हित अपनी मौजूदा स्थिति और विकास को बनाए रखने और भावी विकास करने के प्रयास में है इसी के आधार पर किसी देश की विदेश नीति

निर्मित की जाती है।[1]

विदेश नीति के निर्धारक तत्त्व –

वैश्विकरण के युग में एक देश के राष्ट्रीय हित को उसकी भू–राजनीतिक अवस्थिति और अंतराष्ट्रीय वातावरण से अलग करना कठिन है किसी देश की विदेशनीति उसकी वचन बद्वताएं उसके हितों एवं उद्‌देश्यों के नवीन रूपों को शामिल करती है भारत की विदेश नीति न केवल घरेलू कारकों बल्कि उसके साथ–साथ अंतराष्ट्रीय कारकों से भी निर्धारित होती है। इन कारकों में कुछ गतिशील कारक है जो समय के साथ–साथ बदलते रहते है जबकि कुछ मौलिक कारक है जो विदेशनीति पर दीर्घकालिक प्रभाव डालते है । भारतीय सांस्कृतिक विविधता ने अपने खुलेपन ओर संचित सामर्थ्य के साथ अपनी मिश्रित संस्कृति एवं बौद्विक व आध्यात्मिक गतिविधियों द्वारा बाहरी विश्व को प्रभावित किया है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन, स्वतंत्रता आंदोलन एवं समाज के बहुलवादी रूप के साथ–साथ सहनशीलता, अहिंसा, साध्य एवं साधनों की तुलना जैसे परम्परावादी तत्व भारत की विदेश नीति को दूरदर्शिता प्रदान करते है। भारत की विदेश नीति के निर्धारण में भू'राजनीतिक अवस्थिति के साथ–साथ भू आर्थिक तत्वों ने भी अहम योगदान दिया है भू– राजनीतिक तत्वों के अन्तर्गत उसकी भौगोलिक अवस्थिति, आकार, हिमालय पर्वत, हिंद महासागर की सीमाएं, इसका विशाल आकार, विशाल आबादी भारत की राष्ट्रीय शक्ति के प्रमुख स्त्रोत है। भू–आर्थिक तत्वों के अन्तर्गत भारत की आर्थिक आवश्यकता, आर्थिक सहायता की आवश्यकता, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास, प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता और उनका सफल एवं विकासात्मक प्रयोग, भारतीय बाजार एवं बढती अर्थव्यवस्था का आकार इत्यादि भू– आर्थिक तत्व की भारत की विदेश नीति के निर्धारण में अहम योगदान दिया है।

वर्ष 1990 के बाद विश्व राजनीति में व्यापक परिवर्तन हुए और विदेश नीति के निर्धारण में भू–राजनीतिक तत्वों के बजाय भू–आर्थिक तत्वों पर बल प्रदान किया जा रहा है।

भारतीय विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास

भारतीय विदेश नीति का प्रारंभ नेहरू युग से होता है नेहरू ही विदेश नीति के निर्माता और मूल निर्धारक थे, नेहरू ने ऐसी विदेशनीति अपनाई जो राष्ट्रीय हितों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो, भारत ने अपने हितों के विकास के लिए सैन्य गुटों से अलग रहकर स्वतंत्र व स्वायत विदेश नीति अपनाई। स्वतंत्र व स्वायत विदेश नीति के अलावा भारत के आर्थिक विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया व सार्वजनिक उद्यमों को प्राथमिकता प्रदान की तथा उनके द्वारा देश के सामाजिक व आर्थिक विकास पर बल दिया, उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य तथा लोगों के सामाजिक कल्याण पर बल दिया। नेहरू ने शस्त्रों की होड़ को त्यागकर आर्थिक विकास पर बल दिया। नेहरू औद्योगिकरण पर अधिक बल देना चाहते थे। जिससे भारत का विकास आधुनिक समाज के अनुरूप किया जा सके। नेहरू ने एशिया– अफ्रीकी देशों की एकता की नीति अपनाई वर्ष 1948 में नई दिल्ली में एशियाई संबंधों की बैठक की, वर्ष 1955 में बांडुग सम्मेलन का आयोजन तथा 1954 में चीन के साथ भी अच्छे संबंध बनाने के लिए पंचशीलता की नीति पर बल दिया नेहरू में सदैव ही संयुक्त राष्ट्र संघ को शक्तिशाली बनाने पर बल दिया तथा तीसरी दुनिया का नेतृत्व करने वाली नीति अपनाई।[2]

नेहरू की विदेश नीति में यथार्थवाद की बजाय आदर्शवाद ज्यादा प्रभावी था उन्होंने दुनिया में शांति एवं शांतिपूर्ण सहः अस्तित्व पर बल दिया, हथियारों की दौड़ का विरोध किया। भारत की विदेश नीति के द्वितियक चरण में इंदिरा गांधी ने आदर्शवाद की बजाय यथार्थवाद पर बल दिया तथा अब भारत में सेना के आकार में वृद्धि की गई सैन्य आधुनिकीकरण किया गया क्योंकि 1962 में भारत–चीन युद्ध के कारण इन्दिरा गांधी ने ज्यादा यथार्थवाद की तरफ ध्यान दिया। वर्ष 1971 में भारत एवं सोवियत संघ के मध्य शांति एवं मित्रता की संधि हुई, जिसमें यथार्थवाद साफ दिखाई देता है, वर्ष 1971 के युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को पराजित कर बांग्लादेश का निर्माण किया तथा 1974 में भारत में शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट भी किया। परन्तु इस परिवर्तन के बाद भी भारत की विदेशनीति में आदर्शवादी तत्व निरन्तर बने रहे तथा उन्होंने साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद व रंगभेद नीति का जोरदार समर्थन किया, इंदिरा गांधी ने हिन्द महासागर एवं दक्षिण एशिया में महाशक्तियों में हस्तक्षेप का भी विरोध किया। जनता पार्टी के शासनकाल में मोरारजी देसाई ने अमेरिका के साथ संबंधों पर बल दिया व वास्तविक गुटनिरपेक्षता का नारा दिया। राजीव गांधी के शासन काल के दौरान भारत की विदेश

नीति में नया परिवर्तन आया 1988 में उन्होंने चीन की यात्रा की तथा चीन के साथ संबंधों को सामान्य बनाने पर बल दिया, राजीव गांधी ने तकनीकी एवं आर्थिक विकास पर बल दिया तथा भारतीय अर्थव्यवस्था को उदारीकृत करने का प्रयत्न किया। राजीव गांधी ने भी अपनी विदेश नीति में आदर्शवादी तत्वों को नहीं छोड़ा वर्ष 1988 में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देते हुए कहा कि पूरी दुनिया से 20 वर्षों की निश्चित समय–सीमा के भीतर परमाणु हथियारों को समाप्त कर दिया जाना चाहिए। राजीव गांधी की विदेश नीति श्रीलंका के साथ संबंधों में काफी संशयपूर्ण रही। राजीव गांाधी ने श्रीलंका में शांति सेना भेजी जिससे वहां पर भारत के खिलाफ प्रतिकूल माहौल उत्पन्न हुआ। राजीव गांधी के कार्यकाल के दौरान भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध अत्यधिक प्रतिकूल हुए तथा भारत–नेपाल के बीच भी पारगमन मार्ग को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ।

1990 के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में परिवर्तन आया। सोवियत संघ का विघटन हुआ और अब वैश्विक राजनीति में वैचारिक संघर्ष समाप्त हो गया। शीतयुद्वोत्तर वैश्विक राजनीति में अब उदारीकरण और वैश्वीकरण पर बल दिया जाने लगा।[3]

1990 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था संकटग्रस्त हो गयी और भारत के समक्ष भुगतान संतुलन का संकट उत्पन्न हो गया। शीतयुद्वोत्तर युग में नरसिंह राव (प्रधानमंत्री) और मनमोहन सिहं (वित्त मंत्री) ने भारतीय अर्थव्यवस्था में भारी परिवर्तन किया तथा उदारीकरण की नीति अपनाई तथा सार्वजनिक उद्यमों की प्राथमिकता के सिद्वांत का परित्याग कर दिया, अमेरिका के साथ संबंधों को मजबूत किया क्योंकि अब अमेरिका के साथ संबंध मजबूत करना भारत के लिए विकल्प ना होकर अनिवार्यता थी, 1992 में भारत ने इजराइल के साथ भी कूटनीतिक संबंध स्थापित किए अफ्रीका और लैटिन अमेरिकी देशों के साथ भी आर्थिक एवं व्यापारिक संबंध स्थापित किए। 1996 में भारत की विदेश नीति में पड़ौसी देशों के प्रति बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ 1996 में इन्द्र कुमार गुजराल विदेश मंत्री थे उन्हांने पड़ौसी देशों के साथ संबंध बनाने में पारस्परिकता की मान्यता को परिवर्तित किया और एक तरफा छूट देने की रणनीति अपनाई। वाजपेयी के शासनकाल में भारत ने न्यूनतम परमाणु प्रतिरोध क्षमता के विकस के लिए 1998 में पोखरण में परमाणु परीक्षण किया। वर्ष 2001 के बाद भारत की विदेशनीति में ''आतंक के विरूद्ध युद्ध ' में अमेरिका सहयोग का निर्णय लिया गया। भारत ने पूरी दुनिया को यह बताने का प्रयत्न किया कि भारत सीमापार आतंकवाद से प्रभावित है। इसलिए भारत की विदेश नीति में आतंकवाद एक बड़ा मुद्दा बनकर उभरा। वर्ष 2001 के भारत और अमेरिका संबंध तेजी से आगे बढे और 2005 में भारत और अमेरिका के मध्य सिविल परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

वर्ष 2004 में मनमोहन सिंह के नेतृत्व में बनी यू.पी.ए. सरकार ने भी एन.डी.ए. की विदेश नीति को आगे बढ़ाया, वर्ष 2005 में 'सुदुरवर्ती पड़ौसी' नीति के अंतर्गत दक्षिण–पूर्वी एशिया एवं पश्चिम एशिया के साथ संबंध बनाने पर बल दिया वर्ष 2005 में भारत ने 'पश्चिम की ओर देखों नीति' अपनाई। इस काल में भारत में भू–मण्डलीकरण को सर्वसमावेशी बनाने पर भी बल दिया। भारत अभी भी वर्तमान विश्व आर्थिक प्रणाली में सुधार की मांग कर रहा है। वर्ष 1996 से मई 2014 तक संघ में गठबंधन सरकारों का निर्माण हुआ, जिससे विदेशनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका प्राथमिक हो गयी। गठबंधन सरकार मे सहयोगी दलों के दबाब के कारण त्वरित निर्णय नहीं लिये जा सके। गठबंधन सहयोगियों के दबाव के कारण सरकार की श्रीलंका को प्रति नीति प्रभावित हुई, तथा भारत– बांग्लादेश के बीच अंतः क्षेत्रों के लेन–देन या समझौता भी अटक गया। भारत–अमेरिकी सिविल परमाणु समझौते का भी विरोध हुआ तथा सरकार की आर्थिक नीति ढुल–मुल बन गयी। लेकिन बाद में 2014 में एन.डी.ए. के नेतृत्व में बनी सरकार ने इन समझौतों को कार्यरूप में परिवर्तित किया।

भारत की आर्थिक कूटनीति

एक स्थायी प्रमुख शक्ति होने के लिए भारत को राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सभी पहलुओं में राष्ट्रीय विकास की जरूरत है। जे. बंदोपाध्याय के अनुसार भारत एक ऐसा राज्य है जिसकी रक्षा क्षमता, विदेशी व्यापार की मात्रा, अन्य राज्यों की सहायता करने या अवरोध करने की क्षमता, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भागीदारी और इसके राजनयिक कार्यों के परिणाम ओर पैमाने का बहुत महत्व है और ये विस्तार की स्थिति में है। क्योंकि ये राज्य अर्थ– विभेदित और अपेक्षाकृत अस्थिर अवसंरचना के साथ है, जिसे संक्रमणकालीन व्यवस्था कहा जाता है।[4]

प्रारंभ में भारत केन्द्रीय नियोजन के साथ लोकतांत्रिक समाजवाद के आर्थिक मॉडल का पालन कर रहा था। इस मॉडल में निजी क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र को प्राथमिकता दी गई थी। आर्थिक विकास के लिए इस सामाजिक दृष्टिकोण से वांछित परिणाम नहीं निकला। उसके पश्चात भारत ने 1990 के दशक में पुरानी नीति को छोड़कर निजीकरण उदारीकरण की नीति को स्वीकार किया। इस तरह 1991 की विवर्तनिक नीति बदलाव के लिए मार्ग प्रशस्त किया जब निजीकरण, उदारीकरण और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की नई रणनीति अपनाई गयी। तब से स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि क्षेत्र प्राथमिकता के आधार पर ध्यान प्राप्त कर रहे है। इस तरह, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के रूपान्तरण की गतिशीलता के जवाब में भारत को अपने उत्तर आजादी, शीतयुद्ध निर्धारित रक्षा ओर विदेश नीति प्रतिबद्धताओं पूर्वाभिमुखताओं, और धारणाओं से परे देखना शुरू किया। शीतयुद्ध की वैश्विक व्यवस्था के बाद अमेरिका के साथ इसके मधुर संबंध, दूसरी **'पूर्व की और देखो नीति'** और चीन के साथ व्यापारिक संबंध भारत की नई विदेश नीति उन्मुखीकरण और व्यावहारिकता को प्रदर्शित करते है। इसके साथ ही भारत ने बाहर से निवेश के लिए रास्ता खोल दिया है।

शीतयुद्ध के अंत और नयी वैश्विक राजनीति और आर्थिक व्यवस्था के बाद भारत ने व्यावहारिक रूप से अपनी आर्थिक वृद्धि के लिए आर्थिक कूटनीति का सहारा लिया। भारत ने अपने आर्थिक संबंधों को विविधता दी। वह 1995 में विश्व व्यापार संगठन का संस्थापक सदस्य बन गया। भारत एक सदस्य के रूप में आर्थिक सहयोग और विकास संगठन में शामिल हो गया और वह 1996 में पहली एशिया—यूरोप बैठक में भी भागीदार बना।

1997 में भारत में हिंद महासागर क्षेत्रीय सहयोग (हिमतक्षेस) का सदस्य बना और भारत 2007 से मुक्त व्यापार समझौते के लिए यूरोपीय संघ के साथ बात—चीत कर रहा है।

इसके अलावा भारत 1966 में एशियाई विकास बैंक, 1950 में कोलंबों योजना और 2000 में मेकांग गंगा सहयोग का सदस्य रहा है। ये सभी मंच आर्थिक सहयोग के लिए है भारत (जी—77) समूह—20 (जी—20) और समूह—15 आदि का सदस्य भी है, भारत ब्रिक्स नामक पांच राष्ट्र, समूह का भी सदस्य है। ब्रिक्स राष्ट्रों के बीच वाणिज्यिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रिक्स फोरम, एक स्वतंत्र अंतराष्ट्रीय संगठन 2009 में स्थापित हुआ। ब्रिक्स का वर्ष 2012 का सम्मेलन भारत में हुआ और जिसमें ब्रिक्स देशों ने एक अलग विकास बैंक बनाने का निर्णय किया, वर्ष 2014 में ब्रिक्स विकास बैक का गठन किया गया, जो विकासशील देशों का पहला प्रभावी और बहुपक्षीय विकास बैंक है, इसका मुख्यालय शंघाई में स्थापित किया गया है। इस बैंक द्वारा सदस्य देशों के लिए आधारभूत संरचना के विकास एवं सतत विकास की परियोजनाओं के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। अन्य क्षेत्रीय संगठनों में इब्सा का निर्माण किया गया, इब्सा का निर्माण विश्व व्यापार संगठन की वर्ष 2003 की कानकुन बैठक की असफलता के पश्चात किया गया। इब्सा में भारत ब्राजिल, दक्षिण अफ्रीका शामिल है। जो तीन महाद्वीपों का प्रतिनिधित्व करते है ये देश अपने विदेश नीति के मुद्दों पर आपस में सहयोग करते है इसमें उचित व्यापारिक व्यवस्था, विश्व व्यापार संगठन में सहयोग शामिल है ये भी भारत की आर्थिक कूटनीति को स्थापित करने में अहम् भूमिका निभा रहा है।

परम्परागत रूप में समूची विश्व अर्थव्यवस्था एवं वित्तीय व्यवस्था का नियंत्रण जी—8 के द्वारा किया जाता था, वर्तमान में विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाऐं मंदी का सामना कर रही है और आर्थिक विकास का केन्द्र विकासशील देश बन गए है। जी—20 की स्थापना 1999 में दुनिया की 20 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के द्वारा की गई। जी—20 का निर्माण विश्व में महत्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन का उदाहरण है।[5]

भारत हिमतक्षेस के माध्यम से हिन्द महासागर में अपने व्यापारिक उद्देश्यों को प्राप्तकरने के लिए 1997 से हिन्द महासागर के आस—पास स्थित देशों के साथ मिलकर सहयोग कर रहा है ताकि इस क्षेत्र को शांति का क्षेत्र बनाया जा सके और यहां पर चीन की बढ़ती गतिविधियों पर निगरानी रखी जाए। चीन अपनी ''मोतियों की माला नीति'' द्वारा इस क्षेत्र में अपने प्रभाव को शक्तिशाली बनाने का प्रयास कर रहा है। भारत के तेल एवं गैस की आपूर्ति के लिए हिंद महासागर अत्यधिक महत्वपूर्ण है पश्चिमी एशिया से होने वाली ऊर्जा की आपूर्ति हिंद महासागर से होकर आती है यहां प्राकृतिक संसाधनों का बड़ा भंडार है और भारत का अंतराष्ट्रीय व्यापार इसी पर निर्भर है एक महत्वपूर्ण प्रगति के अंतर्गत भारत के द्वारा सेशेल्स के एजम्पशन द्वीप तथा मॉरीशस में अगलेगा द्वीप पर महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना के विकास का समझौता हुआ ये सभी प्रयास भारत के द्वारा चीन के बढ़ते भू— राजनीतिक प्रभाव को रोकने के लिए किये जा रहे है। वर्तमान हिंद महासागर क्षेत्र में शांति एवं

सुरक्षा बनाए रखने के लिए आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, जापान तथा अमेरिका के साथ समुद्री सुरक्षा के मुद्दे पर सहयोग किया जा रहा है।

भारतीय विदेश नीति में समुद्र और समुद्री संचार मार्गों पर नियंत्रण के लिए अनेक उपाय किए जा रहे है प्रधानमंत्री द्वारा वर्ष 2014 में फिजी की यात्रा के दौरान प्रशान्त महासागरीय देशों के सम्मेलन का विचार दिया गया इसमें 14 द्वीप शामिल है वर्ष 2015 में इन देशों की दूसरी बैठक जयपुर में आयोजित हुई। भारत के द्वारा इन देशों के साथ व्यापारिक एवं आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया जा रहा है और इससे भी बढ़कर इन देशों में चीन के बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित करने का प्रयत्न किया जा रहा है चीन के द्वारा इन महासागरीय देशों को बड़ी आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इन महासागरीय द्वीपों में भारत भी सहायता प्रदान कर रहा है। ताकि इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा सके। प्रशांत महासागर दुनिया के प्रमुख व्यापारिक मार्गों के करीब आधे हिस्से के बराबर है। दुनिया में सबसे अमीर देशों में से कुछ इसके तट पर मौजूद है मालक्का की खाड़ी, हिंद महासागर के पूर्वी छोर पर मुख्य व्यापारिक मार्गों में से एक है जो कि प्रशांत महासागर के साथ एक लिंक प्रदान करता है। इस क्षेत्र में भारत का सामरिक महत्व है। भारत की पूर्व की ओर देखो नीति, मेकांग–गंगा सहयोग, एशिया प्रशांत आर्थिक सहयोग में भारत की सदस्यता प्राप्त करने की मांग एशिया प्रशांत देशों के साथ आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत द्वारा प्रयासित प्रमुख पहल है। परम्परागत रूप में एशिया– प्रशांत राष्ट्र का प्रयोग किया जाता था, परन्तु अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के द्वारा इन्डो– पैसेफिक शब्द का उपयोग किया गया। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा भी इन्डो पैसेफिक का प्रयोग आरंभ किया गया यह भारत के केन्द्रीय महत्व का प्रमाण है। भारत के द्वारा इन्डो पैसेफिक रणनीति के द्वारा समुद्री अर्थव्यवस्था का विकास पारस्परिक संपन्नता, नौसैनिक क्षमता का विकास व सैन्य संचालन में सहयोग, आधारभूत संरचना का निर्माण एवं सुरक्षा व मानवीय सहायता के लिए सहयोग प्रमुख है वर्ष 2000 के बाद समुद्री सुरक्षा , समुद्री अर्थव्यवस्था एवं समुद्री संचार पर विशेष बल दिया जा रहा है, मारिशस, सेशेल्स के साथ सहयोग के द्वारा भारतीय प्रभाव को सुदृढ़ किया जा रहा है अर्थव्यवस्था को शक्तिशाली किए बिना सामरिक एवं सांस्कृतिक शक्ति का विस्तार संभव नहीं है। बदले वैश्विक परिदृश्य में, भारत ने पूर्व की ओर देखो नीति की शुरूआत की और 1992 में दस–सदस्यीय असियान का क्षेत्रीय साझेदार बन गया, 1996 में संवाद साझेदार और 2002 में शिखर स्तर का साझेदार 8 अक्टूबर 2003 को आसियान–भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए गए और अंत में 2012 में एक सामरिक भागीदारी में परिणिति हुई। इससे भारत आर्थिक कूटनीति को सावधानी पूर्वक संभालने से उसे एक प्रमुख शक्ति के रूप में आगे आने के लिए अधिक शक्ति प्राप्त होगी। आसियान देशों के साथ अमेरिका और जापान के समर्थन के साथ, भारत द्वारा चीन से आने वाली चुनौतियों से निपटने की संभावना है। 16वीं, 17वीं लोकसभा के चुनाव में भारत में 1984 के बाद एक दल के नेतृत्व में सरकार का निर्माण हुआ। पहली बार भारतीय जनता पार्टी को लोकसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ जिसका प्रभाव भारत की विदेश नीति पर स्पष्ट देखा जा सकता है। मोदी सरकार ने 16वीं लोकसभा के शपथ ग्रहण समारोह में दक्षेस के सभी सदस्यों को आमंत्रित किया, प्रधानमंत्री की पहली विदेश यात्रा भारत के सबसे छोटे पड़ौसी भूटान के लिए निर्धारित की गई। भारत को विनिर्माण का केन्द्र बनाने के लिए सरकार के द्वारा 'मेक इन इंडिया' का नारा दिया गया तथा भारत को विश्व के निवेश में केन्द्र के रूप में विकसित करने का प्रयत्न किया गया। भारत तेजी से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित कर रहा है। वर्ष 2016 में भारत ने 60 अरब डॉलर का निवेश आकर्षित किया। अब भारत विश्व में लगभग 9वां सबसे बड़ा निवेश प्राप्त करने वाला देश बन गया है तथा भारत व्यापार के लिए सरल व सुविधाजनक देश के रूप में निर्मित किया जा रहा है। क्योंकि एक प्रभावशाली, विदेशनीति निर्माण के लिए शक्तिशाली अर्थव्यवस्था का होना आवश्यक है। 17वीं सरकार के प्रमुख प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस बार अपने शपथ ग्रहण समारोह में बिम्सटेक देशों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया बिम्सटेक के अलावा किर्गिज गणराज्य और मॉरिशस के राष्ट्राध्यक्ष भी मौजूद रहे, बिम्सटेक नेताओं को बुलाना बहुत बड़ा कूटनीतिक कदम माना जा रहा है और इन देशों के नेताओं से अलग–अलग द्विपक्षीय वार्ताएं भी की। बिम्सटेक दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया के लिये एक पुल का कार्य भी करता है साथ ही 7 देशों वाले बिम्सटेक में 5 दक्षिण एशिया के व 2 आसियान के देश शामिल है 1997 में बना बिम्सटेक अंतर्राष्ट्रीय तकनीक व आर्थिक सहयोग संगठन है जो भारत की आर्थिक कूटनीति में अहम् भूमिका निभा सकता है।[6]

भारत की नेबरहुड फर्स्ट और एक्ट इस्ट की नीति की प्राथमिकता को पूरा करने के लिए बिम्सटेक एक बेहतर मंच है भारत के लिए इस क्षेत्र में बड़े फायदे है बंगाल की खाड़ी से सटे 4 तटीय राज्यों और पूर्वात्तर भारत के राज्यों में करीब 30 करोड़ से ज्यादा भारतीय लोग रहते है यदि ये दोनों क्षेत्र बंगाल की खाड़ी, म्यांमार और थाइलैण्ड से जुड़ जाते है तो इस क्षेत्र के विकास की समस्या हल हो सकती है। इसके अलावा पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद और चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे जैसे मुद्दे भी बड़े मुश्किल के क्षेत्र बने हुए है साथ ही बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर में भी चीन का प्रभाव बढ़ा है और भारत बिम्सटेक के जरिये दबाब बना सकता है 2014 के शपथ ग्रहण समारोह में सार्क के देशों को बुलाया था मौजूदा समय में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के कारण सार्क के देशों में साथ सहयोग मुश्किल होता जा रहा था ऐसे में बिम्सटेक एक क्षेत्रीय मंच के रूप में सामने आया है जहां 5 सार्क देश अपने सहयोग के मुद्दो पर बातचित कर सकते है सार्क देशों का सदस्य पाकिस्तान 2014 में शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुआ था लेकिन इस बार भारत–पाकिस्तान संबंधों के तनाव के चलते भारत ने पाकिस्तान को आमंत्रित नहीं किया है हालांकि यह पहली बार नहीं हुआ है कि भारत ने पाकिस्तान को नजर अंदाज किया हो साल 2016 में आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान भी भारत ने पाकिस्तान को नजर अंदाज किया था और सार्क देशों के बजाय भारत ने बिम्सटेक देशों को बुलाया था दरअसल विदेश नीति किसी भी देश के राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने के लिए खास मायने रखती है विदेश नीति के जरिये ही कोई देश किसी अन्य देश के साथ अच्छे संबंध बनाकर ही अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रख सकता है और हासिल कर सकता है चुनाव के बाद आयी सरकार पहले दिन से ही विदेश नीति की दशा और दिशा को बनाने में जुट गई बिम्सटेक देशों के साथ मॉरिशस और मिर्गिज गणराज्य के देशों के राष्ट्राध्यक्षों को बुलाकर भारत ने कूटनीतिक संदेश दिया है मॉरिशस के प्रधानमंत्री भारतीय मूल के है। इस पहल ने प्रवासी भारतीय लोगों तक भारत की पहुंच को बढ़ावा देने का काम किया है। वर्ष 2017 में भारत शंघाई सहयोग संगठन का सदस्य बन गया है इस संगठन की सदस्यता से भारत सामरिक और व्यापारिक रूप से मध्य एशिया से अपने संबंध अच्छे बनाना चाहता है। बिम्सटेक में सार्क व आसियान के देश भी शामिल इसलिए इसको बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है। बिम्सटेक का महत्व इसलिए भी बढ़ गया कि बंगाल की खाड़ी व हिन्द महासागर में हमारा ऊर्जा व व्यापार का बहुत बड़ा भाग है। जून में शंघाई सहयोग संगठन का विभेद थे 19वां सम्मेलन सम्पन्न हुआ इसके द्विपक्षीय सहयोग व आतंकवाद जैसे मुद्दों पर बातचीत हुई। प्रधानमंत्री मोदी की रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीनी राष्ट्रपति से भी द्विपक्षीय वार्ता हुई, हालांकि पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान से द्विपक्षीय मुलाकात नहीं हुई और ऐसा करके प्रधानमंत्री मोदी ने पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया है। इसके अनेक देश आतंकवाद से प्रभावित है लेकिन पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित सीमा पार आतंकवाद , आतंकवाद खात्मे में एक बड़ी बाधा माना जा रहा है अभी हाल ही ये जी–20 देशों का शिखर सम्मेलन ओसाका (जापान) में सम्पन्न हुआ उसमें भी भारतीय प्रधानमंत्री ने अनेक ऐसे मुद्दो को उठाया जो भारत के राष्ट्रीय हितों को पूरा करते हैं। नई सरकार का रूख प्रमुख तौर भारत की अर्थव्यवस्था को 2024 तक 5 ट्रिलियन डॉलर बनाने का है इसलिए भारत की विदेश नीति भू–राजनीतिक से हटकर भू– आर्थिक कूटनीति की तरफ बढ़ रही है।

संदर्भ

1. मुचकुन्द दुबे – इण्डियन फॉरेन पॉलिसी, प्रियर्सन प्रेस, नई दिल्ली, 2013 पेज नं. 75–180
2. वी.पी. दत्त– बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली, 2003, पेज नं. 3–77
3. आर.एस. यादव – भारत की विदेशनीदति, डॉलिंग किंडरस्ले (इंडिया) प्रा.लि., 2013, पृ. 85–100
4. जे. बंधोपाध्याय–द मेकिंग ऑफ इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, एलाइड पब्लिशर्स नई दिल्ली, 2006, 22 पेज नं. 16–17
5. हरीश कपूर – इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, 1947–92, नई दिल्ली, 1994, पृ. 118
6. देवेन्द्र कौशिक, द इंडियन ओशियनः ए स्ट्रेटजिक डाइमेन्शन, नई दिल्ली, 1983, पृ. 2
7. भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, इकोनोमिक सर्वे, 2011–2018 से संकलित।